

संस्था

संस्था शब्द का अर्थ है संगठित सामाजिक व्यवहार जिसे एक व्यक्ति जीवन भर समाज में सदैव नियंत्रित करता है। व्यवस्था बनाए रखने के लिए लोगों को कुछ नियमों और मानदंडों का पालन करना महत्वपूर्ण है। प्रत्येक सामाजिक संरचना और प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था के लिए संस्थाओं का एक विशेष अर्थ होता है। समाज का संगठित स्वरूप संस्थाओं के माध्यम से ही दिखाई देता है। उदाहरण के लिए, परिवार संस्था पति, पत्नी, बच्चों, माता-पिता और परिवार से जुड़े अन्य लोगों की भूमिकाओं के लिए मानदंड प्रदान करती है, जिस पर एक विशेष सामाजिक व्यवस्था आधारित होती है। इसलिए, कोई संस्था कोई भवन, लोगों के लिए घर या यहां तक कि एक संगठन भी नहीं है। जैसे-जैसे रीति-रिवाज और परंपराएँ समाज द्वारा स्वीकार की जाती हैं और स्थिरता प्राप्त करती हैं, वे संस्थाएँ बन जाती हैं। सुमनेर ने संस्थाओं को संस्कृति का वाहक कहा। उदाहरण के लिए, एक धार्मिक संस्था लोगों का समूह नहीं है। यह एक विशिष्ट उद्देश्य से जुड़े विचारों, विश्वासों, प्रथाओं और रीति-रिवाजों की एक प्रणाली है। सिख उन लोगों का एक संगठन है जो सिख धर्म की मान्यताओं को स्वीकार करते हैं और इसके रीति-रिवाजों का पालन करते हैं। अतः सिख धर्म एक धर्म है। हिंदू धर्म एक धर्म है, इस्लाम एक धर्म है।

सभी सामाजिक गतिविधियों के प्रबंधन और संगठन के लिए कई प्रमुख संस्थानों की आवश्यकता होती है। प्रकार्यात्मक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, प्रत्येक समाज संस्थागत नियमों के आधार पर संस्थानों का निर्माण करता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उन जरूरतों को पूरा किया जा सके। इसलिए, जन्म से ही हम इन संस्थाओं के बुनियादी नियम सीखते हैं, और परिवार और समाज के सदस्यों के रूप में हम अपना व्यवहार सीखते हैं और उसे तदनुसार अपनाते हैं।

टी. बी. बाटमोर ने निम्न क्रियाओं के लिए संस्थाओं के निर्माण को आवश्यक माना है।

क. संचार की व्यवस्था

ख. आर्थिक व्यवस्था जिससे उत्पादन और वितरण को नियंत्रित किया जा सके।

ग. नये पीढ़ी के समाजीकरण के लिए (परिवार तथा शिक्षा)

घ. सत्ता को नियंत्रित करने के लिए राजनीति प्रणाली

ड. धार्मिक अनुष्ठान जो व्यक्तिगत घटनाओं जैसे जन्म, विवाह और मृत्यु को नियंत्रित कर सके।

संस्थाओं के महत्वपूर्ण लक्षण

संस्थाएं व्यवहार को नियंत्रित करने का एक प्रमुख साधन हैं इसलिए प्रत्येक संस्थाओं की एक परंपरा और आचार संहिता है। इन परंपराओं के द्वारा हमारे व्यवहार अपने आप नियंत्रित होते रहते हैं।

बाह्यता

संस्था एक बाहरी सच है जो हमारे बाहर रहते हुए भी क्रियाओं तथा हमारे व्यवहार को नियंत्रित करता है। यह बाहर रहते हुए भी अपनी मौजूदगी का एहसास कराता है। उदाहरण के लिए भाषा को संस्था के रूप में देखा जा सकता है जो हमारे बाहर होते हुए भी हमारी क्रियाओं को प्रभावित करता है।

वस्तुनिष्ठता

संस्था वस्तुनिष्ठ तरीके से हमारे व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। यह वस्तुनिष्ठ इसलिए हो जाता है क्योंकि इसके इस स्वरूप को हम सभी वास्तविक रूप में स्वीकार करते हैं। भाषागत व्यवहार को ही अगर उदाहरण माना जाये तो यह कहा जा सकता है कि कब हम भाषा की गलती करते हैं और कब गलती नहीं कर रहे होते हैं इसका वस्तुनिष्ठ तरीके से आकलन किया जा सकता है।

बाह्य दबाव

संस्थाओं का एक बाहरी दबाव भी होता है जिसे व्यक्ति चाहकर भी अपने चेतन मन से नहीं हटा सकता। संभव है व्यक्ति अपने कार्य की व्यस्तता के कारण भूल जाये और अगर ऐसा होता है तो अपनी इस गलती का एहसास जनमत के एतराज जताने से तुरन्त हो जाता है। उदाहरण के लिए मंदिर में प्रवेश अगर हम जूता पहन कर करें तो यह गलती चाहे अनजाने में ही क्यों न हुई हो मंदिर में मौजूद लोग विरोध प्रदर्शित करेंगे और हमारी गलती का एहसास दिला देते हैं।

नैतिक बल

प्रत्येक संस्था का एक नैतिक बल होता है जिसके द्वारा संस्थाएं अपना दबाव मनुष्य पर सदैव बनाए रखते हैं। संस्थाओं की वैधानिकता को चुनौती नहीं दी जा सकती क्योंकि इन संस्थाओं को ऊर्जा उसमें निहित नैतिक बल से मिला होता है। इसका उल्लंघन करने वाले को इसकी सजा दी जाती है। उदाहरण के लिए विवाह के नियम, अगर कोई व्यक्ति इसका उल्लंघन करता है तो उसे उस गाँव तथा अपने समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। इस प्रकार संस्थाओं का अपना एक अलग नैतिक बल होता है जिसके कारण समाज के नियमों की मर्यादा बनी रहती है।

ऐतिहासिक स्वरूप

संस्थाओं का अपना एक अलग ऐतिहासिक स्वरूप भी होता है जिसके कारण संस्थाएं न केवल एक सच्चाई के रूप में अपना अस्तित्व बनाये रखते हैं बल्कि वे अपना एक अलग पहचान ऐतिहासिक भूमिका के कारण भी बनाकर रखते हैं। संस्थाओं का अर्थ अचानक ही नहीं बना होता है बल्कि इसके पीछे एक ऐतिहासिक सोच और परंपरा भी जुड़ी होती है। यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि संस्थाओं के नियम व्यक्ति के जन्म लेने से पहले ही बने होते हैं। व्यक्ति उन संस्थागत नियमों का सिर्फ पालन करना अपना फर्ज समझता है।

समाजशास्त्रियों ने संस्थाओं के अध्ययन में पाँच प्रकार के प्रमुख संस्थाओं का वर्णन व्यापक रूप से किया है ये संस्थाएँ निम्न हैं:

क. आर्थिक संस्थाएं: इसके द्वारा उत्पादन, वितरण और उपभोग जैसे क्रियाओं का वर्णन किया जाता है।

ख. राजनीतिक संस्थाएं: इसके द्वारा सत्ता का नियंत्रण किस प्रकार होता है-इसे समझने में मदद मिलती है।

ग. स्तरीकरण: इसके द्वारा किस प्रकार समाज के वर्ग अपनी स्थिति के आधार पर घंटे होते हैं। उन प्रक्रियाओं को समझा जा सकता है।

घ. स्वजन संस्थाएं: इन संस्थाओं से संस्थाएं विवाह, परिवार और बच्चों के समाजीकरण की क्रिया को समझा जा सकता है।

ड. सांस्कृतिक संस्थाएं: ये संस्थाएं, धार्मिक, वैज्ञानिक तथा कला के क्षेत्र में संस्थाओं की क्या भूमिका है उसे समझने में मदद करती है।